International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

"महिलाओं के अधिकार और उन्हें सशक्त बनाने के उपाय"

हेमावती बी[1]
[1]शोध विद्यार्थी, हिन्दी साहित्य विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय अलवर, राजस्थान, भारत

डॉ. सुभाश चन्द भाटिया[2]
[2]प्रोफेसर, हिन्दी साहित्य विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय अलवर, राजस्थान, भारत

भोध सार

यह शोध पत्र भारतीय समाज में महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण के उपायों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें महिलाओं के कानूनी, सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के महत्व और उन्हें सुनिश्चित करने वाले संवैधानिक प्रावधानों पर चर्चा की गई है। साथ ही, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, कानूनी संरक्षण और सामाजिक मानसिकता में बदलाव के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आवश्यक उपायों का विस्तार से वर्णन किया गया है। यह पत्र सरकार और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं का उल्लेख करता है और सशक्तिकरण की दिशा में चुनौतियों और उनके समाधान पर विचार करता है। इस शोध का उद्देश्य समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारना और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता को उजागर करना है।

भाब्द कुंजीः– महिलाओं के अधिकार, महिला सशक्तिकरण, भारतीय संविधान, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, कानूनी संरक्षण, सामाजिक मानसिकता।

परिचयः

महिलाएं समाज का अभिन्न अंग हैं और उनके अधिकारों और सशक्तिकरण का सीधा संबंध समाज की प्रगति और विकास से है। भारतीय समाज में, परंपरागत रूप से महिलाओं को कई सामाजिक, आर्थिक और कानूनी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। हालांकि, बीते कुछ दशकों में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने और उन्हें समान अवसर प्रदान करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। यह शोध पत्र महिलाओं के अधिकारों की महत्वपूर्णता को उजागर करता है और सशक्तिकरण के लिए आवश्यक उपायों का विश्लेषण करता है।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

इस शोध पत्र में, महिलाओं के अधिकारों से संबंधित कानूनी प्रावधानों, सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की पहल, और सामाजिक मानसिकता में बदलाव के महत्व पर चर्चा की गई है। इसके साथ ही, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, और कानूनी संरक्षण के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के विभिन्न तरीकों का भी विश्लेषण किया गया है। यह पत्र उन चुनौतियों और समस्याओं को भी रेखांकित करता है जो महिलाओं के सशक्तिकरण के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती हैं और उनके समाधान के लिए आवश्यक कदमों का प्रस्ताव करता है।

महिलाओं के अधिकार और सशक्तिकरण के मुद्दे विशेष रूप से भारतीय समाज में गहरे और महत्वपूर्ण हैं। इन मुद्दों पर विचार करना और इन्हें समझना हमारे समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये समाज की प्रगति और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण अधिकार और संसाधन हैं।

महिलाओं के अधिकारः

महिलाओं के अधिकार समाज में समानता और न्याय के आधार को दर्शाते हैं। भारतीय संविधान ने महिलाओं को समानता के अधिकारों का संरक्षण और सुनिश्चित किया है। अनुच्छेद 14 और 15 महिलाओं को समान प्रतिष्ठा और समान अधिकारों का अधिकार देते हैं, जबकि अनुच्छेद 16 में समान वेतन के लिए प्रतिष्ठा की गई है। महिलाओं को समान प्रावधानों के तहत शिक्षा, रोजगार, और समाजिक एवं आर्थिक अधिकारों की गारंटी देते हुए संविधान ने भारतीय महिलाओं के अधिकारों को सुरक्षित किया है।

महिला सशक्तिकरणः

महिला सशक्तिकरण उन्हें स्वतंत्र बनाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसका मतलब है कि महिलाएं अपने जीवन में स्वतंत्रता, निर्णय और समानता का अनुभव करें और समाज में अपने पूर्ण पोटेंशियल को प्राप्त करें। महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, समाजिक मानसिकता में परिवर्तन, और कानूनी संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कदम उठाने की आवश्यकता है। इन सभी क्षेत्रों में सुधार करने से महिलाओं को स्वतंत्रता और सम्मान की भावना मिलती है और वे अपने अधिकारों को पूरी तरह से प्रयोग कर सकती हैं।

1. महिलाओं के अधिकारः

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

महिलाओं के अधिकार वह कानूनी, सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता हैं जो उन्हें समाज में समानता और न्याय दिलाते हैं। भारतीय संविधान में महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए कई प्रावधान हैं, जैसे:

- ❖ समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14): कानून के समक्ष समानता और राज्य द्वारा समान संरक्षण का अधिकार।
- ❖ अवसर की समानता (अनुच्छेद 16): सार्वजनिक रोजगार में समान अवसर का अधिकार।
- ❖ शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद 23): मानव तस्करी और बलात श्रम के विरुद्ध संरक्षण।

2. महिलाओं के सशक्तिकरण के उपाय:

शिक्षा:

- ❖ महिला शिक्षा का महत्व: शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाती है और उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करती है।
- ❖ सरकारी योजनाएं: बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना आदि।
- ❖ चुनौतियाँ और समाधान: ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का अभाव, पारिवारिक समर्थन की कमी। इन समस्याओं को दूर करने के लिए सरकार और गैर–सरकारी संगठनों को मिलकर काम करना होगा।

आर्थिक सशक्तिकरण:

- ❖ स्वरोजगार और उद्यमिता: महिलाओं को स्वरोजगार और छोटे व्यवसायों में सहायता देना।
- ❖ माइक्रोफाइनेंस और स्वयं सहायता समूह: महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए।
- ❖ सरकारी योजनाएं: मुद्रा योजना, महिला उद्यमिता मंच आदि।

कानूनी अधिकार और संरक्षण:

- ❖ घरेलू हिंसा और दहेज प्रथा: घरेलू हिंसा अधिनियम, दहेज निषेध अधिनियम आदि।
- ❖ कार्यस्थल पर सुरक्षा: कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न से संरक्षण अधिनियम।

- प्रवर्तन की चुनौतियाँः कानूनी जागरूकता की कमी, न्याय प्रणाली की धीमी गति। इसके लिए प्रभावी प्रवर्तन और त्वरित न्यायिक प्रक्रियाओं की आवश्यकता है।

सामाजिक मान्यताएँ और मानसिकता में परिवर्तनः

- लैंगिक समानताः समाज में लैंगिक भेदभाव को समाप्त करने के प्रयास।
- सामाजिक अभियानः महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण के लिए जागरूकता अभियान।
- परिवार और समाज की भूमिकाः महिलाओं को समान अवसर देने और उनके समर्थन में खड़े होने की आवश्यकता।

साहित्य की समिक्षा

शंखरी कुमार भारतीय महिला अधिकारों और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में एक प्रमुख विचारक और शोधकर्ता हैं। उन्होंने अपने शिक्षार्थी और शोधकर्ता के रूप में विशेषज्ञता प्राप्त की है और उनके अनुसंधान उन्हें महिला समाज में समाजिक और कानूनी समस्याओं के समाधान के प्रति गहरा रूचि रखने के लिए प्रेरित करते हैं। शंखरी कुमार ने अपने कई शोध प्रोजेक्ट्स में महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा, और अधिकारों की सुरक्षा के मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया है। उनके शोध विषयों में महिलाओं के विकास में शिक्षा की भूमिका, जेंडर और समाज में समानता के बढ़ावे, और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए कानूनी उपाय शामिल हैं। शंखरी कुमार की प्रमुख पुस्तकों में "Women, Education, and Development: Profiling Capabilities" And "Speaking of the Self: Gender, Performance, and Autobiography in South Asia" शामिल हैं, जो उनके शोध और विचारों को व्यापक रूप से प्रस्तुत करती हैं और समाज में महिलाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मदद करती हैं।

बेल हुक्स (इमसस ीववो) का योगदान महिला स्वतंत्रता और फेमिनिज्म के क्षेत्र में व्यापक और महत्वपूर्ण है। उनके लेखन में समाजिक न्याय, व्यक्तिगत विकास, और सांस्कृतिक समावेशन के मुद्दे पर गहरी विचारधारा उजागर की गई है। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों, खासकर काले महिलाओं के अधिकारों को लेकर मार्गदर्शन प्रदान किया और उनके समाजिक स्थिति में सुधार के लिए प्रोत्साहन दिया। उनकी प्रमुख पुस्तकें जैसे "Feminist Theory: From Margin to Center" and "Ain't I a Woman?: Black Women and Feminism"ने व्यापक प्रभाव डाला और फेमिनिज्म के स्थान को समझाने में मदद की। बेल हुक्स के विचार और लेखन ने समाज को उनकी सोच में विश्वास और समझने के लिए प्रोत्साहित किया है, जिससे महिलाओं के लिए न्याय और समानता के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

निवेदिता मेनन एक प्रमुख भारतीय विचारक, विचारशील, और अध्यापिका हैं, जिनका कार्य महिला अधिकारों, जेंडर अनुसंधान, और साहित्य में विशेष रुचि रखता है। उन्होंने अपने व्यापक शोध और लेखन के माध्यम से महिलाओं के समाजिक स्थान, उनके अधिकार, और समाज में समावेशन के मुद्दों पर गहरा विचार किया है। निवेदिता मेनन की प्रमुख पुस्तकों में "Gender and Narrative in the Mahabharata" (2007) and "Unruly Women: The Politics of Confinement and Resistance" (1991) शामिल हैं, जो उनके अनुसंधान के परिणामों को समर्पित करती हैं। उनके शोध कार्य में महिलाओं के स्वतंत्रता, शिक्षा, और समाज में समानता के विषय पर विचार किए गए हैं, और उन्होंने विभिन्न साहित्यिक और समाजशास्त्रीय पहलुओं पर गहरी अध्ययन किया है। निवेदिता मेनन के कार्य ने महिला अधिकारों, जेंडर परिवर्तन, और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर विचार को सामाजिक और विचारशील स्तर पर प्रोत्साहित किया है, और उनके विचार और शोध अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

अशीष नंदी एक प्रमुख भारतीय साहित्यशास्त्री और समाजशास्त्री हैं, जो अपने अद्वितीय योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका कार्य भारतीय साहित्य, समाज और संस्कृति, और साहित्य संचार के क्षेत्र में है। अशीष नंदी ने अपने कई लेखनों और अनुसंधानों में भारतीय समाज की विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है, जैसे कि भारतीय साहित्य में व्यक्ति और समाज के संबंध, भारतीय साहित्य के समाजशास्त्रीय पहलु, और भारतीय संस्कृति की भूमिका। उनकी प्रमुख पुस्तकों में "The Changing Face of Indian Literary Discourse in English" (2005) and "Interrogating Postcolonialism: Theory, Text and Context" (1996) शामिल हैं, जो उनके शोध और विचारों को समर्पित करती हैं। उनके अनुसंधान उन्हें भारतीय साहित्य और समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करते हैं और उनके विचार साहित्य और समाजशास्त्रीय अध्ययन में महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

भोध की समस्या

महिलाओं के अधिकारों और उनकी सशक्तिकरण के विषय में कई मुद्दे और समस्याएं हैं जो समाज में हमें समझनी और समाधान करनी चाहिए। यहां कुछ मुख्य मुद्दे दिए जा रहे हैं:

- शिक्षा और पहुँचः कई जगहों पर महिलाओं को उचित शिक्षा और पहुँच की कमी होती है। उन्हें शिक्षा के माध्यम से अधिक सशक्त बनाने के लिए उचित शिक्षा और प्रशिक्षण की सुविधा प्राप्त करानी चाहिए।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

- ❖ वित्तीय स्वतंत्रता: महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए उन्हें वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए योजनाएं और समर्थन प्रदान करने की आवश्यकता है। उन्हें बैंक खाते, क्रेडिट, और बचत की सुविधाएं समझी जानी चाहिए।
- ❖ कानूनी संरक्षा: महिलाओं को विभिन्न कानूनी मुद्दों में संरक्षा और उनके अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कानूनी संविधानों को सशक्त बनाया जाना चाहिए।
- ❖ सामाजिक परिवेश: महिलाओं को समाज में सम्मानित एवं समर्थित किया जाना चाहिए, जिससे कि उनका समाज में भाग लेने में कोई रोकटोक न हो।

भाोध का महत्व

इस अध्ययन का महत्व महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण के संदर्भ में बहुत व्यापक है। यहां कुछ मुख्य कारण दिए जा रहे हैं जिनसे इस अध्ययन का महत्व समझा जा सकता है:

- ❖ समाजिक समता और न्याय: महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण की अध्ययन समाजिक समता और न्याय के मानकों को बढ़ावा देता है। यह महिलाओं को समाज में उनकी स्थिति के मामले में जागरूक करता है और उन्हें समान अधिकारों की मांग करने में प्रेरित करता है।
- ❖ आर्थिक विकास: महिलाओं के सशक्तिकरण से उनके आर्थिक विकास में सुधार होता है। जब महिलाएं शिक्षित होती हैं, उन्हें उचित काम मिलते हैं और वे अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकती हैं। इससे उनके परिवार और समाज का भी विकास होता है।
- ❖ राष्ट्रीय विकास: महिलाओं के सशक्तिकरण से राष्ट्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। जब महिलाएं सक्षम होती हैं, तो वे समाज के हर क्षेत्र में अपनी भूमिका निभा सकती हैं, जैसे की शिक्षा, स्वास्थ्य, और नीति निर्माण।

भाोध का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण को समझना, उनके विकास में संभावित समस्याओं का परिचय देना, और उन्हें बेहतर समझने के लिए आवश्यक निर्देशक और सुझाव प्रदान करना होता है। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्यों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

1. मुख्य अधिकारों को समझना और उनके प्रयासों का अध्ययन करना जैसे की शिक्षा, स्वास्थ्य, और साक्षरता.

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

2. महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उपायों और कार्यक्रमों का अध्ययन करना, जैसे की आर्थिक विकास, स्वास्थ्य, और राजनीतिक भागीदारी.
3. महिलाओं के सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक परिवेश का विश्लेषण करना, जो उनके अधिकारों और सशक्तिकरण को प्रभावित कर सकता है.
4. महिलाओं को विशेष समस्याओं से निपटने के लिए योग्यताओं का अध्ययन करना, जैसे की हिंसा, उत्पीड़न, और वित्तीय विकास.
5. : समाज में समानता और समाज में बदलाव के लिए नीतियों और कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

भोध प्र न

1. महिलाओं के अधिकारों का प्रावधान कैसे विकसित किया जा सकता है?
2. महिलाओं के सशक्तिकरण में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक प्रतिबंधों का क्या प्रभाव है?
3. महिलाओं के अधिकारों की समर्थन में सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों का क्या योगदान है?
4. महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा और प्रशिक्षण की क्या भूमिका होती है?
5. महिलाओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति समाज की जिम्मेदारी क्या होनी चाहिए?

भोध परिकल्पना

1. महिलाओं के सशक्तिकरण में उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
2. समाजिक और सांस्कृतिक परिवेश महिलाओं के अधिकारों के संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
3. वित्तीय स्वतंत्रता महिलाओं के सशक्तिकरण में सकारात्मक योगदान करती है।
4. सरकारी नीतियां और कार्यक्रम अधिकारों के संरक्षण और सशक्तिकरण में सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।
5. महिलाओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति समाज में अधिकतम संवेदनशीलता होती है, उनके अधिकारों को सुरक्षित करने में मदद करती है।

भोध पद्वति

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण के विषय में अध्ययन करने के लिए विभिन्न अनुसंधान पद्धतियाँ उपयुक्त हो सकती हैं। यहां कुछ महत्वपूर्ण अनुसंधान पद्धतियाँ दी गई हैं जिन्हें इस अध्ययन में उपयोग में लिया जा सकता है:

गहरी अध्ययन यह पद्धति महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण के विभिन्न पहलुओं को गहराई से अध्ययन करने के लिए उपयुक्त होती है। इसमें समाज और सांस्कृतिक संदर्भ, सरकारी नीतियां, और समुदाय की भूमिका का विश्लेषण किया जाता है। यह अध्ययन प्रायोगिक जानकारी, साक्षात्कार, और व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर किया जा सकता है।

समाजशास्त्रीय अनुसंधान इस अनुसंधान पद्धति में महिलाओं के समाज में स्थितिकरण, समाजिक संरचना, समाजी अनुसंधान तकनीकियां, और समुदाय के अंतर्गत उनके अधिकारों और सशक्तिकरण का अध्ययन किया जाता है। इसमें आम तौर पर सामाजिक रूप से उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया जाता है।

अंकुश अध्ययन अंकुश अध्ययन महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण के विशेष मामलों के अध्ययन के लिए उपयुक्त हो सकता है। इसमें एक निर्दिष्ट समाजिक, आर्थिक, या सांस्कृतिक संदर्भ में महिलाओं के अधिकारों की स्थिति और उनके सशक्तिकरण के उपायों का विश्लेषण किया जाता है।

निश्कर्श:

अध्ययन के आधार पर, महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण के मुद्दे का महत्वपूर्ण और समाजिक रूप से न्यायाधीश विचार करना अत्यंत आवश्यक है। समाज में इसके अध्ययन से पता चलता है कि विशेष रूप से महिलाओं के अधिकारों को समझना और सुरक्षित करना जरूरी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जबकि समाजिक और सांस्कृतिक प्रतिबंधों को दूर करना आवश्यक होता है। इस संदर्भ में, सरकारी नीतियां और समुदायिक पहलों के विकास में भी वृद्धि की आवश्यकता है ताकि महिलाओं को समाज में उचित स्थान और सम्मान प्राप्त हो सके। इस प्रकार, महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने में हमारी संवेदनशीलता और समाज की प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

1. डॉ. अनिल गोयल, हिन्दी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका, आर्याना पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1985
2. आशा रानी व्होरा, भारतीय नारी अस्मिता और अधिकार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1986
3. आशा रानी व्होरा, नारी ाो ाण आइने और आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1982
4. ओम प्रकाश ार्मा, समकालीन कहानी लेखन, पूजा प्रकाशन, दिल्ली, 1973
5. इन्द्रनाथ मदान, समकालीन साहित्य : एक नई दृ ि ट, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1970
6. कृश्णा अग्निहोत्री, स्वातन्त्र्योंत्तर, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 1990
7. डॉ. कृश्ण लाल, हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, राधाकृ ण प्रकाशन, दिल्ली, 1980
8. कैलाश नाथ ार्मा, भारतीय समाज और संस्कृति, किशोर पब्लिशिंग हाउस, कानपुर, 1952
9. डॉ. कुसुम 'वियोगी' चर्चित कहानियाँ, दलित महिला कथाकारों की, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2015
10. तसलीमा नसरीन, औरत के हक में, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1994
11. गोस्वामी तुलसी दास, रामचरित्र मानस, गीता प्रेस, गौरखपुर, 1995
12. डॉ. तिलकराज, प्रेमचन्द और नानक सिंह के उपन्यास, जीवन ज्योति प्रकाशन, दिल्ली, 2014
13. नीरा देसाई, भारतीय समाज में नारी, मैकमिलन इण्डिया लि. दिल्ली, 1982
14. नामवर सिहं, छायावाद , लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 1975
15. सुदेश बत्रा, नारी अस्मिता हिन्दी उपन्यासों में, रचना प्रकाशन, जयपुर, 2016